(2) एयर का त्वमीमांसा-निरसन प्रयत्न

(क) भूमिका

अब एयर के लिये तत्वमीमांसा का निरसन सरल हो जाता है। वस्तुतः जिस रूप में उन्होंने अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है, उससे, उसके उपयोग से यह स्पष्ट हो जाता है कि तत्त्वमीमांसीय कथन **निरर्थक** है। एयर ने तत्त्मीमांसा का निरसन यह कह कर नहीं किया है कि जो तत्त्वमीमांसा में कहा जाता है वे सभी असत्य हैं। एयर यह भी नहीं दिखाते हैं कि जिस प्रकार के तर्कों पर तत्त्वमीमांसीय उक्तियाँ आधृत हैं, वे सभी अयुक्त हैं या दोषग्रस्त हैं। उनके अनुसार तो वे प्रयत्न निरर्थक हैं, तत्त्वमीमांसा के क्षेत्र में प्रवेश कर तत्त्वमीमांसीय तत्वों के विषय में अर्थपूर्ण ढंग से कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि कोई कथन तत्त्वमीमांसीय तत्त्व का अस्तित्व स्थापित करता है तो वह उतना ही अर्थहीन है, जितना वह कथन जो ऐसे किसी तत्त्व का अनास्तित्व को स्थापित करता है।

Scanned with CamScanner

अतः एयर के तार्किक अनुभववाद में किया गया तत्त्वमीमांसा-निरसन पाश्चात्य दर्शन में पहले किये गये इस प्रकार के प्रयत्नों से (जैसे ह्यूम या कांट के द्वारा किया गया तत्त्वमीमांसा-निरसन से) मौलिक रूप में भिन्न है।

हम उनके इस प्रयत्न का विवरण तीन उपखण्डों में करने की चेष्टा करेंगे। पहले तो हम उनके उस मूल तर्क को स्पष्ट करेंगे जो तत्त्वमीमांसा-निरसन की नींव है। यह उनके तत्त्वमीमांसा-निरसन प्रयत्न का मूल रूप होगा। तब हम उनके इस प्रयत्न को "ईश्वर" जैसे तत्त्वमीमांसीय कथनों के उदाहरण पर बैठा कर स्पष्ट करेंगे। और तब अन्त में यह दिखायेंगे कि कैसे एयर इसी आधार पर कुछ प्रमुख तत्त्व-मीमांसीय समस्याओं के तत्त्वमीमांसीय विवेचन को निरर्थक दिखाते हैं।

(ख) उनके तत्त्वमीमांसा-निरसन प्रयत्न का मूल रूप

एयर ने जिस रूप में अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, उसी के आधार तथा उसी का प्रयोग करके वे तत्त्वमीमांसा निरसन का प्रयास करते हैं। उनके अनुसार यह सिद्धान्त स्पष्टतः दिखा देता है कि अर्थपूर्ण कथन या तो विश्लेषणात्मक होते हैं या तथ्यात्मक होते हैं। अब प्रश्न है कि तत्त्वमीमांसीय कथन इन दोनों में किस कोटि के कथन हैं। वे विश्लेषणात्मक नहीं हो सकते क्योंकि विश्लेषणातमक कथन वे ही होते हैं जो या तो अपने विश्लेषणात्मक हों या किसी विश्लेषणात्मक कथन से प्रागनुभविक (Apriori) ढंग से निकले हों। यदि वे स्वयं भी विश्लेशणात्मक हों तो उन्हें अन्य विश्लेषणात्मक उक्तियों के साथ संबंधित किया जा सकता है। किन्तु यह तो तर्कसिद्ध है कि विश्लेषणात्मक कथन न स्वयं विश्व के विषय में कुछ जानकारी देते हैं और न उनसे कोई तथ्यात्मक कथन निकाला जा सकता है। इसका मूल कारण है कि विश्लेषणात्मक कथन पुनरुक्ति (Tautology) मात्र हैं और पुनरुक्तियों से जो भी कथन निकल सकता है वह भी पुनरुक्ति ही होगी। तो तत्वमीमांसक अपने तत्वमीमांसीय कथन को मात्र पुनरुक्ति तो नहीं ही मानते, वे तो उन्हें ज्ञानात्मक-सूचनात्मक कथन कहते हैं जिनसे सत् या तत्त्व के विषय में जानकारी मिलती है। अतः तत्त्वमीमांसीय कथन विश्लेषणात्मक नहीं हैं।

अब यदि इन कथनों को अर्थपूर्ण होना है तो उन्हें तथ्यात्मक कहना पड़ेगा। उस अर्थ में उन्हें अनुभविक प्राक्कल्पना (empirical hypothesis) के रूप में स्वीकारना होगा। वही तभी संभव होगा जब उनके अनुभव-परीक्षा की संभावना हो, जब उनके सत्य या असत्य-निर्धारण का आधार—उनकी संभावना का आधार—अनुभव में उपलब्ध हो। इसे जाँचने के लिये एयर ने एक तार्किक ढंग बताया है। एयर ने कहा है कि जिस कथन को अर्थपूर्णता का दावा है उसमें यह क्षमता होनी चाहिए कि वह अन्य आधार-वाक्यों के साथ इस प्रकार जुट सके कि उससे कोई निरीक्षण-वाक्य (Observation Sentence) आपदित हो—वह भी इस रूप में कि उस अन्य वाक्य से अकेले यह निरीक्षण-वाक्य न निकलता हो। तत्त्वमीमांसीय कथन अर्थपूर्णता की इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते। उदारहणतः इस तत्त्वमीमांसीय वाक्य को लें—'आत्मा सरल हैं'। अब यह सोचें कि क्या यह वाक्य किसी अन्य आधार का सहारा लेकर भी किसी निरीक्षण-वाक्य को आपदित कर सकता है? स्मरण रखना है कि निरीक्षण-वाक्य वैसा वाक्य है जो किसी अनुभव का विवरण देता है। 'आत्मा सरल है' वाक्य के आधार पर हम किसी ऐसे अनुभव-वाक्य के विषय में नहीं सोच सकते जिसकी पुष्टि किसी वास्तविक या संभावित अनुभव में हो सके। अतः इस जाँच के आधार पर कहा जा सकता है कि तत्त्वमीमांसीय वाक्य अनुभविक या तथ्यात्मक कथन भी नहीं है।

Scanned with CamScanner

तो, अर्थपूर्ण कथनों की दोनों कोटियों में किसी में तत्त्वमीमांसीय कथन नहीं आते। कथनों की इन दोनों के अतिरिक्त एक तीसरी कोटि है जिसे एयर की भाषा में **'शब्दजाल'** (gibberish) कहा गया है। ये वस्तुतः निरर्थक ध्वनि हैं, कोई अर्थ सूचित नहीं करते, किन्तु इस प्रकार से व्यवहृत होते है कि प्रतीत होता है कि वे वास्तविक तथ्य-निर्देश कर रहे है। वस्तुतः वे शब्दजाल है—शब्दों के उपयोग के कारण उसमें उलझ कर ऐसी धारणा मिल रही हो जबकि उनसे कोई सूचना नहीं मिलती। एयर के अनुसार तत्त्वमीमांसीय कथन इसी कोटि के कथन हैं। अतः वस्तुतः अर्थहीन है। एयर ने उनका शब्दजाल रूप विभिन्न तत्त्वमीमांसीय समस्याओं के विश्लेषण से स्पष्ट किया है जिसकी संक्षिप्त विवेचना उपखण्ड (3) में होगी।

(ग) ''ईश्वर है'' का विश्लेषण

अब हम एयर के ऊपर विवेचित विचार को तत्त्वमीमांसीय वाक्य 'ईश्वर है' पर बिठा कर स्पष्ट करें। यह वाक्य तत्त्वमीमांसीय वाक्य तब बनता है जब यह किसी तात्विक शक्ति या सत् या तत्व या व्यक्ति को सूचित करता है। प्रश्न यह है कि उस अर्थ में भी क्या यह वाक्य अर्थपूर्ण हैं?

यदि यह वाक्य अर्थपूर्ण है तो या तो यह विश्लेषणात्मक वाक्य है या आनुभविक वाक्य है। यदि यह विश्लेषणात्मक वाक्य है तो यह पुनरुक्ति (Tautology) मात्र है। तब तो इस वाक्य की स्थापना जिन वाक्यों के आधर पर होगी या इससे जो वाक्य निकलेंगे वे सभी पुनरुक्ति होंगे, और यह तो स्थापित ही है कि पुनरुक्तियाँ सूचनात्मक नहीं होतीं। तो इस वाक्य के प्रतिपादन कर्त्ता इसे इस कोटि में तो नहीं ही रख सकते।

अब यह देखें कि क्या यह अनुभवात्मक कथन है। इसके लिये यह देखना है कि क्या इसकी साक्षात् या परोक्ष अनुभव परीक्षा की संभावना है? एयर का कहना है कि दोनों की संभावना नहीं है। साक्षात् अनुभव परीक्षा की संभावना तब होती जब किसी अन्य आधार वाक्य के साथ जोड़कर इससे किसी निरीक्षण वाक्य को निकाला जा सके वह भी इस रूप में कि वह निरीक्षण वाक्य उस अन्य आधार वाक्य से पृथक रूप में न निकले। किन्तु एयर कहते हैं कि ऐसा संभव नहीं है। यह संभव नहीं है कि 'ईश्वर है' वाक्य को किसी वाक्य से इस प्रकार संयोजित करें कि उससे कोई निरीक्षण वाक्य आपदित हो निकल आये। तो इसके साक्षात् अनुभव परीक्षा की संभावना तो नहीं ही है।

कुछ लोग कहते हैं कि इसकी परोक्ष अनुभव परीक्षा संभव है। विश्व में व्यवस्था प्रयोजन दिखाई देते हैं। इसकी उपस्थिति, इनका अनुभव परोक्ष रूप में इन व्यवस्थाओं के कारक की स्थापना कर देता है। एयर कहते हैं कि यह भी संभव नहीं है। यह संभव तब होता जब 'ईश्वर है' वाक्य का अर्थ मात्र इतना होता कि 'प्रकृति में व्यवस्था-प्रयोजन हैं'। किन्तु 'ईश्वर है' वाक्य यदि तत्त्वमीमांसीय वाक्य है तो यह एक अनुभवातीत दैविक व्यक्तित्व या तत्त्व को सूचित करने का दावा करता है। उस 'दैव-तत्व' के संबंध में दी गयी कोई उक्ति न सत्य हो सकती है न असत्य, न विश्लेषणात्मक हो सकती है और न आनुभविक। परोक्ष अनुभव परीक्षा की संभावना के लिये एक शर्त यह भी है कि जिन वाक्यों को 'ईश्वर है' जैसे वाक्य के साथ जोड़ कर किसी निरीक्षण वाक्य के आपदित होने की संभावना को देखना है उन अन्य वाक्यों को या तो विश्लेषणात्मक होना है या

Scanned with CamScanner

आनुभविक। तात्त्विक ईश्वर संबंधी कोई वाक्य इन दोनों में से कोई नहीं है। अतः 'ईश्वर है' वाक्य की परोक्ष अनुभव परीक्षा की संभावना भी समाप्त हो जाती है। तो इस प्रकार यह वाक्य अर्थहीन ही सिद्ध होता है।

एयर स्पष्ट रूप में कहते है कि उनके द्वारा ऐसे वाक्यों की निरर्थकता का निर्देश न तो उन्हें निरीश्वरवादी (Atheist) बनाता है न अज्ञेयवादी (Agnostic)। ये भी 'ईश्वर है' का खण्डन करते हैं, किन्तु एयर अपने तत्त्वमीमांसा-निरसन को इनके प्रयत्नों से सर्वथा भिन्न मानते हैं। अज्ञेयवादी यह मानते हैं कि 'ईश्वर है' वाक्य ऐसी संभावना प्रस्तुत करता है जिस पर विश्वास करने या जिसको नकारने का यथेष्ट ज्ञानात्मक आधार उपलब्ध नहीं है। निरीश्वरवादी का कहना है कि 'ईश्वर नहीं है' वाक्य की स्थापना की संभावना है। एयर का कहना है कि उनका प्रयत्न इन दोनों से भिन्न हैं, बल्कि कुछ अर्थ में तो उनका मत इन दोनों मतों से पूर्णतया असंगत है। उनके मत में 'ईश्वर संबंधी जो भी उक्तियाँ दी जाती है वे कोई अर्थ सूचित नहीं करतीं। अतः निरीश्वरवादी जब यह कहते हैं कि 'ईश्वर नहीं है' तो यह वाक्य भी उतना ही निरर्थक है जितना कि वाक्य 'ईश्वर है'। उसी प्रकार अज्ञेयवादी यह नहीं कहते कि 'ईश्वर है या नहीं है' का प्रश्न अर्थपूर्ण प्रश्न नहीं है। उन लोगों के अनुसार तो ''एक अनुभवातीत ईश्वर है'' तथा 'एक अनुभवातीत ईश्वर नहीं है'' इन दोनों में एक वाक्य सत्य तथा दूसरा वाक्य असत्य हो सकता है, उनका तो यही कहना है, कि अभी हमारे पास ऐसे ज्ञानात्मक साधन उपलब्ध नहीं है जिसके आधार पर हम एक को सत्य तथा दूसरे को असत्य कहें। किन्तु, एयर के मत में ये दोनों वाक्य निरर्थक हैं, दोनों के सत्य या असत्य होने की संभावना नहीं है। इस प्रकार एयर का दावा है कि उनका यह तत्त्वमीमांसा-निरसन-प्रयत्न न निरीश्वरवाद का समर्थन करता है और न अज्ञेयवाद का पोषण, बल्कि उन दोनों से असंगत ही है।

इस स्थल पर एयर यह सोचते हैं कि तत्त्वमीमांसक यह कह सकते है कि तत्त्वमीमांसीय वाक्यों में 'ईश्वर' शब्द से प्राकृतिक शक्तियों का बोध होता है। तो क्या यदि ईश्वर अग्नि, वायु, वर्षा, बिजली जैसे प्राकृतिक वस्तुओं को सूचित करे तो 'ईश्वर' संबंधी उक्तियाँ अर्थपूर्ण हो जाएँगी? एयर का उत्तर है 'नहीं'। उदाहरणतः बादल की गरज और बिजली की प्रचण्ड चमक को देख यह उक्ति दी गयी—'जेहोवा क्रुद्ध है'। क्या इस वाक्य को अर्थपूर्ण स्वीकारा जा सकता है? एयर कहते हैं कि यदि इस वाक्य 'जेहोवा क्रुद्ध है' का अर्थ मात्र इतना ही है कि 'गरज के साथ बिजली चमक रही है' तब तो इस वाक्य को स्वीकारा जा सकता है। किन्तु धर्म दर्शन जब इस प्रकार का वाक्य देता है तो उसके पीछे विचार यह है कि 'जेहोवा' नाम का एक 'दैविक व्यक्ति है'। 'जेहोवा' के तात्विक अस्तित्व को स्वीकारा जाता है। तो, यदि 'जेहोवा क्रुद्ध है' का तात्पर्य है कि कोई दैनिक व्यक्ति उसी प्रकार क्रुद्ध है जिस प्रकार सामान्यतः मनुष्य क्रुद्ध होता है, तब इस वाक्य की अनुभव परीक्षा की कोई संभावना नहीं रहती, और उस अर्थ में 'जेहोवा क्रुद्ध है' वाक्य अन्ततः अर्थहीन ही है।

उसी प्रकार उन वाक्यों की भी वैसी ही व्याख्या होगी जो मरणोपरान्त जीवन (after life) से संबंधित है। यदि हम कहें कि मनुष्य को मरना ही है, या यह भी कहें कि 'मनुष्य वस्तुतः मरता नहीं है' तो इन दोनों वाक्यों को अर्थपूर्ण कहा जा सकता है क्योंकि इन दोनों की अनुभव परीक्षा हो सकती है। यह और बात है कि अनुभव परीक्षा से पहला वाक्य सत्य

Scanned with CamScanner

तथा दूसरा वाक्य असत्य सिद्ध होगा। सत्य-असत्य होने की क्षमता ही तो वाक्यों को अर्थपूर्ण बनाती है। किन्तु यदि यह कहा जाय कि मनुष्य में कुछ अप्रत्यक्ष तत्त्व है जो आत्मा है तथा जो मृत्यु के बाद भी जीवित रहती है, तो इस प्रकार के कथन तत्त्वमीमांसीय कथन होंगे, और इनकी अनुभव परीक्षा की संभावना नहीं रहेगी। फलतः एयर के अनुसार वे अर्थहीन होंगे।

एयर कहते हैं कि 'ईश्वर है' वाक्य में 'ईश्वर' शब्द का प्रयोग संज्ञा रूप में होता है, और इस प्रयोग के कारण यह भ्रान्ति उत्पन्न होती है कि ईश्वर नाम से कोई दिव्य तात्त्विक सत् सूचित होता है। अब इस तात्त्विक सत् संबंधी कथन दिये जाते हैं जो सब अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त के अनुरूप निरर्थक ही सिद्ध होते हैं।

इस स्थल पर एयर को एक उत्तर की संभावना दिखाई देती है। ईश्वरवादी कह सकते हैं कि ''ईश्वर है'' या 'ईश्वर' संबंधी सभी कथनों को अर्थहीन इसी कारण कहा जा रहा है क्योंकि एयर के अनुसार उनकी अनुभव परीक्षा की संभावना नहीं है। किन्तु, ऐसे विशेष अनुभव हैं, धार्मिक अनुभव, आध्यात्मिक अनुभव आदि जिनसे ईश्वर संबंधी कथनों की पुष्टि होती है। तो, ईश्वरवादी कह सकते हैं कि एयर ने अपने को मात्र इन्द्रिय—आश्रित अनुभव तक सीमित रखा है, इस प्रकार के विशेष-अनुभवों की ओर ध्यान ही नहीं दिया है। इसी कारण ईश्वर संबंधी कथनों के विषय में उन्हें अनुभव परीक्षा की संभावना दिखाई नहीं देती।

एयर इस उत्तर की संभावना पर विचार करते हैं। वे जानते हैं कि कुछ लोग धार्मिक अनुभव, अन्तःप्रज्ञात्मक अनुभव—जैसे अनुभव की संभावना की बात कर यह कहते हैं कि ईश्वर-संबंधी कथनों की अनुभव-परीक्षा की संभावना भी है। एयर का कहना है कि यदि यह सत्य है कि ऐसे अनुभव भी ठींक वैसे ही हैं—उसी कोटि के हैं—जैसे हमारे साधारण अनुभव होते हैं तो उन्हें इन अनुभवों को मान्यता देने और इसके आधार पर ईश्वर-कथनों को अर्थपूर्ण स्वीकारने में कोई आपत्ति नहीं होती। किन्तु उनके अनुसार ऐसा है नहीं। जो लोग इन अनुभवों का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, वे कहते हैं कि इन अनुभवों से एक अनुभवातीत तत्त्व के होने का—उसके अस्तित्व का—ज्ञान मिलता है। उनका यह कहना उसके इन अनुभवों को सामान्य अनुभवों से सर्वथा भिन्न-गुणात्मक रूप में भिन्न-कोटि का बना देता है। सामान्य अनुभव में हम जब एक 'लाल धब्बे' को देखते हैं, तो हम कहते हैं कि हमने एक लाल धब्बा देखा और मानते हैं कि वह वस्तुनिष्ठ रूप में है। कोई ऐसी वस्तु है जिसमें इन्द्रियों से प्राप्त यह विशेष लक्षण विद्यमान है। अब यह वाक्य 'एक लाल वस्तु है' ऐसा वाक्य है जो अनुभव-परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है। उन विशेष प्रकार के अनुभवों के साथ ऐसा नहीं होता। इन अनुभवों के आधार पर यदि हम मात्र यह कहें कि 'ऐसा अनुभव हुआ है'—तो इसे स्वीकारा जा सकता है। किन्तु हम कहते है 'एक अनुभवातीत दैनिक तत्त्व (या ईश्वर) है।' अब यह वाक्य अनुभव-परीक्षा की कसौटी पर खरा नहीं उतरता—अतः इसे अर्थहीन मानना ही पड़ता है।

(घ) तत्त्वमीमांसीय कथनों का शब्द-जाल रूप

हमने ऊपर कहा है कि एयर के तत्त्व मीमांसा-निरसन प्रयत्न के निष्कर्ष रूप में तत्त्वमीमांसीय कथन अन्ततः शब्द-जाल (gibberish) ही सिद्ध होते हैं। एयर विभिन्न उदाहरणों के सहारे इन कथनों के शब्द-जाल रूप को स्पष्ट करते हैं। उनका उद्देश्य यह

Scanned with CamScanner

दिखाना है कि तत्त्वमीमांसक जिस प्रकार की समस्याओं से जूझते हैं, वे वस्तुतः अर्थहीन है, किन्तु भाषीय-प्रयोगों के कारण उन्हें वे समस्यायें सार्थक प्रतीत होने लगती है। विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि वे शब्द-जाल हैं, उनमें कुछ सार्थक समस्यायें निहित नहीं है, जो समस्यायें दिखाई देती है—वे वस्तुतः शब्दों के प्रयोग के ताना-बुना के कारण समस्या के रूप में दिखाई देने लगती हैं, उनमें कुछ वास्तविक तथा अर्थपूर्ण समस्यायें निहित नही है।

प्रथमतः हम उनके द्वारा विश्लेषित द्रव्य(substance)का उदाहरण लें। भाषीय प्रयोगों के कारण हमारे मन में एक धारणा घर कर जाती है कि हर नाम (Name) के अनुरूप वस्तुतः उनसे सूचित होनेवाला कोई तत्त्व होता ही है। बात यह है कि हम अपनी भाषा में इन्द्रिय-ज्ञात लक्षणों का विवरण तब तक दे ही नहीं पाते जब तक किसी ऐसे शब्द को नहीं ढूँढ़ लें या बना लें जिससे वह तत्त्व सूचित हो जिसमें ऐन्द्रिक-लक्षण है। उद्राहरणतः हम पीला, भारी, कीमती आदि लक्षणों का भाषा में विवरण कर ही नहीं पाते जब तक किसी ऐसे शब्द का प्रयोग न कर लें जिनसे सूचित होने बाले तत्त्व में वे लक्षण हों (जैसे यहाँ सोना)। वस्तुतः इन भाषीय सीमाओं के कारण ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है किन्तु इनके लगातार प्रयोग के कारण हम समझने लगते हैं कि वस्तुतः कुछ तत्त्व है जिसमें इस प्रकार के ऐन्द्रिक लक्षण विद्यमान हैं और उस तत्त्व को द्रव्य (substance) कहते हैं। हम ऐसा मानने लगते हैं कि द्रव्य अपने में कोई वस्तु हैं (thing-in-itself) जो भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होता रहता है (प्रतिति appearance)। इसी कारण द्रव्य की तत्त्व-मीमांसीय समस्या, तथा सत् एवं आभास की तत्त्वमीमांसीय समस्या का उद्भव होता है। एयर कहते हैं कि वस्तुतः, इन प्रतीतियों का प्रतीति-रूप इस कारण नहीं है कि वे किसी एक ही द्रव्य की प्रतीतियाँ हैं, बल्कि इनके आपसी संबंध के कारण है। यह तार्किक विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है। किन्तु तत्त्वमीमांसक यहाँ इन भाषीय प्रयोगों के कारण उत्पन्न समस्याओं को वास्तविक तथा अर्थपूर्ण समझ लेता है, और उन्हीं से जूझता रहता है।

एयर इससे और अधिक सरल ऐसा उदाहरण लेते हैं जहाँ व्याकरणीय प्रयोगों के कारण तत्त्वमीमांसीय समस्या उत्पन्न हो जाती है। यह उदाहरण **सत्भाव** (Being) का है। एयर विश्लेषण कर दिखाते हैं कि सत् का तात्विक भाव ऐसा भाव है जिसके संबंध में तत्त्वमीमांसा में सदा विवेचनाएँ होती रही है, ऐसे-ऐसे प्रश्न उठाये गये हैं जिनका उत्तर किसी वास्तविक या संभावित अनुभव के आधार पर नहीं दिया जा सकता। फिर भी ऐसे प्रश्न उठते रहे हैं। ऐसा क्यों होता है—इसी का एयर अपने ढंग से उत्तर देते हैं। उनका कहना है कि ऐसी प्रतिज्ञप्तियाँ जो गुण और लक्षण बताती हैं तथा ऐसी प्रतिज्ञप्तियाँ जो अस्तित्ववान है'—इन दोनों में व्याकरण की दृष्टि से एक संज्ञा के बाद क्रिया का प्रयोग हुआ है। किन्तु इस समानता के आधार पर यह भ्रान्ति हो जाती है कि तार्किक दृष्टि से भी दोनों एक ही प्रकार के हैं। किन्तु स्पष्ट है कि दोनों का तार्किक स्वरूप एक जैसा नहीं है। इन्हीं उदाहरणों को देखें। शहीदों के कष्ट झेलने के संबंध में हम अनेक ढंगों से सोच सकते हैं किन्तु शहीदों के अस्तित्व के संबंध में ऐसा नहीं है। ऐसा इस कारण होता है कि 'अस्तित्व', (जैसा कि कांट ने कहा है), कोई गुण या लक्षण नहीं है। हम जब भी किसी विषय पर किसी गुण का आरोपण करते हैं—जैसे शहीद कष्ट झेलते हैं तो हम यह भी एक तरह से कह रहे हैं कि शहीद अस्तित्ववान हैं। यदि अस्तित्व को अलग से एक गुण

Scanned with CamScanner

या लक्षण मान लें, तो अस्तित्व का अलग से आरोपण सभी भावात्मक प्रतिज्ञप्तियों को पुनरुक्ति बना देगा। अतः सत्भाव से जुटी सभी समस्याएँ इस मान्यता पर आधृत है कि 'अस्तित्व' एक पृथक् गुण या लक्षण है, और यह मान्यता व्याकरण के वैसे प्रयोगों पर आधृत है जो उक्तियों को अर्थपूर्णता की सीमा से बाहर ले जाता है।

उसी प्रकार एयर एक अन्य उदाहरण लेते हैं। तत्त्वमीमांसक कभी-कभी एक विचित्र प्रकार के तत्त्व की बात करते हैं—वास्तविक अनास्तित्त्व (real non-existent entity) की बात करते हैं। ऐसे तत्त्वों के अन्तर्गत प्लेटो के सामान्य (universals), हाइडेगर का 'शून्यता विचार' (Nothingness) आदि आते हैं। एयर का कहना है कि ऐसे तात्त्विक तत्त्वों का विचार भी भाषीय जाल के कारण ही उत्पन्न होता है। हमारी धारणा बन जाती है कि किसी भी वाक्य के उद्देश्य के अनुरुप कुछ वास्तविक तत्त्व होता ही है। जब आनुभविक जगत में ऐसे तत्त्वों के लिये कोई स्थान नहीं दिखता तो हम मान लेते हैं कि अवश्य ही सामान्य आनुभविक जगत से भिन्न जगत में वे तत्त्व अस्तित्ववान हैं। यदि अस्तित्व शब्द का प्रयोग आनुभविक जगत में स्थित वस्तुओं के लिए होता है तो आनुभविक जगत से भिन्न जगत में स्थित तत्त्वों को वास्तविक (real) कह दिया जाता है। (प्लेटो ने Ideas को वास्तविक मानने के लिये इसी प्रकार का तर्क ही दिया है)। स्पष्ट है कि यहाँ भाषीय प्रयोग के कारण भ्रान्ति बनी है, वस्तुतः इस प्रकार के तत्त्वों की सार्थकता स्थापित नहीं हो सकती। एयर ने विश्लेषण से यह स्पष्ट किया है कि ऐसे तत्त्वों को स्वीकार कर उनसे प्रतिज्ञप्तियाँ बनाने पर कैसी विषमता(oddity)उत्पन्न होती है। मान लें हम पौराणिक गाथाओं में वर्णित 'यूनिकार्न' (एक सिंह वाले घोड़े) की बात करते हैं, और कहते हैं कि वे सामान्य अनुभव जगत में भले ही अस्तित्ववान न हों, देवों की दुनिया में अस्तित्ववान हैं। आनुभविक जगत को ध्यान में रख वे अपनी ओर से अर्थपूर्ण ही नहीं सत्य उक्ति देते हैं कि युनिकार्न काल्पनिक हैं।'' एयर इसका विश्लेषण करते हुए इसमें निहित विषमता को स्पष्ट करते हैं। यदि इस कथन का यह तात्पर्य है कि 'पुराणों में वर्णित एक सिंह वाला घोड़ा कल्पना का चित्र हैं तो यह वाक्य अर्थपूर्ण हो सकता है। किन्तु यदि हम यहीं यह कहें कि यह वाक्य ठीक वैसा ही वाक्य है जैसा कि वाक्य कुत्ते विश्वसनीय हैं तो विषमता होगी। कुत्ते को विश्वसनीय होने के लिये अस्तित्ववान होना है। आनुभविक जगत में अस्तित्ववान तथा काल्पनिक दोनों साथ-साथ होना तो आत्म-व्याघातक है अतः हम मान लेते हैं कि यह दैव-जगत में अस्तित्ववान है''। किन्तु यह तो ऐसा कथन हो जाता है कि जिसकी अनुभव परीक्षा की कोई संभावना ही नहीं है। अतः यह अर्थहीन कथन है। इस तरह स्पष्ट होता है कि 'यूनिकार्न' का यदि ''दैव जगत में अस्तित्ववान एक सिंह वाला घोड़ा'' के अर्थ में प्रयोग होता है तो वाक्य ''यूनिकार्न काल्पनिक है'' अर्थहीन होता है, सत्य नहीं। हम इसे सत्य इसलिये कह देते हैं कि इसके भाषीय प्रयोग के जाल में हम उलझ जाते हैं। हाइडेगर के शून्यता संबंधी कथन कुछ इसी कोटि के कथन जैसे हैं।

इस प्रकार एयर कहते हैं कि तत्त्वमीमांसक निरर्थक कथन देते हैं तथा शब्द जाल के कारण यह समझ नहीं पाते कि वे निरर्थक हैं। तत्त्वमीमांसक कवियों जैसा भी नहीं है क्योंकि कविगण जब काल्पनिक चित्र खिंचते हैं तो उन्हें यह अवगति रहती है कि उनके चित्र काल्पनिक है। तत्त्वमीमांसक को ऐसी अवगति नहीं रहती। वह तो व्याकरणीय प्रयोगों से धोखा खा जाता है, और उस भ्रान्ति के कारण समझ बैठता है कि वह जो कुछ कह रहा है वह बड़ा ही अर्थपूर्ण हैं, जब कि वस्तुतः शब्दजाल भेद स्पष्ट कर देता है कि इस भ्रान्ति में वह जो कुछ कहता है सब अर्थहीन ही हैं।

Scanned with CamScanner